

कौन समझेगा मेरी बात-अगर पेश करें
 फिर न होगी ये मुलाकात-अगर पेश करें
 अगर पेश करें अगर पेश करें

कौन - - - -

फक्कड़ी भेष की-सानी न कोई पाया है
 मिटाये गम तेरे-रेंसी ये विधि लाया है
 गरज-गर-तेरी हो बन्दे ॥२॥

तो लुझे पेश करें

फिर न होगी - - - -

खुदा से मांग कर-रेंसा-जहाँ लाया है ॥२॥

हसीन-जिन्दगी जीने का

सिला पेश करें ॥२॥

फिर न होगी - - - -

चोट पे-चोट लगी-चोट ने चट कह डाला

ये गम रात-रेंसी रात

किसे पेश करें

फिर न होगी - - - -

जलाया दिल मेरा-ओ, बे-वफा तारीफ क्या करूँ ५५५५

कुद बचा-खाक होने से-

ये ज़िगर पेश करूँ ५५५५ ॥२॥

फिर न होगी-----

दिल में खींची हुई-तस्वीर बयाँ कर डाली ५५

हुई क्या बात-रेंसी बात-

अगर पेश करूँ ५५५५

फिर न होगी-----

जो थीं तेरी-मजबूरियाँ

कर दी बयाँ "थी बाबा थी"

मेरे राहबर-मेरे अरमा-

तुझे क्या पेश करूँ ५५५५

फिर न होगी-----